ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 188-190**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं पर पालन–पोषण शैली का प्रभाव : एक तुलनात्मक अध्ययन

आशा कुमारी, 2. डॉ0 बिशेखा कुमारी

शोध अध्येत्री– शिक्षा संकाय, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, 2. प्राचार्य, एक्जाल्ट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, महुआ, वैशाली (बिहार)भारत

Received-27.08.2025, Revised-08.09.2025, Accepted-16.09.2025 **E-mail: aaryvart2013@gmail.com**

सारांशः ***प्रस्तुत शोध लेख में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं पर विभिन्न पालन–पोषण शैलियों के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि अधिकारपूर्ण, अधिनायकवादी, अनुज्ञेय तथा उपेक्षात्मक पालन–पोषण शैलियाँ छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। अध्ययन में 300 छात्रों को नमूने के रूप में चयनित किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन तथा परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि अधिकारपूर्ण पालन–पोषण शैली वाले छात्रों में व्यावसायिक आकांक्षाएँ अधिक पाई गईं, जबकि उपेक्षात्मक पालन–पोषण शैली वाले छात्रों में आकांक्षा स्तर अपेक्षाकृत निम्न पाया गया।***

कुंजीभूत शब्द– **व्यावसायिक आकांक्षाएँ, उपलब्धि अभिप्रेरणा, पालन–पोषण शैली माध्यमिक विद्यालय, छात्र, व्यावसायिक आकांक्षाएँ**

1. प्रस्तावना– परिवार बच्चे के व्यक्तित्व विकास का प्रथम एवं सबसे महत्वपूर्ण संस्थान है। माता–पिता का व्यवहार, अनुशासन, स्नेह, प्रोत्साहन तथा अपेक्षाएँ बच्चों के मानसिक, सामाजिक और व्यावसायिक विकास को प्रभावित करती हैं। पालन–पोषण शैली बच्चे की आत्म–अवधारणा, आत्म–विश्वास तथा उपलब्धि प्रेरणा को आकार देती है।

आधुनिक समय में व्यावसायिक आकांक्षाएँ केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक सुरक्षा और आत्म–निर्भरता का भी आधार हैं। इसलिए यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि माता–पिता की पालन–पोषण शैली छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं को किस प्रकार प्रभावित करती है।

2. पालन–पोषण शैली की अवधारणा– पालन–पोषण शैली से आशय माता–पिता के उन व्यवहारों एवं दृष्टिकोणों से है, जिनके माध्यम से वे बच्चों का मार्गदर्शन करते हैं। बॉमरीनड के अनुसार पालन–पोषण शैली के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं:

1. अधिकारपूर्ण (Authoritative)
2. अधिनायकवादी (Authoritarian)
3. अनुज्ञेय (Permissive)
4. उपेक्षात्मक (Neglectful)

अधिकारपूर्ण शैली में अनुशासन एवं स्नेह दोनों का संतुलन होता है। अधिनायकवादी शैली में नियंत्रण अधिक तथा संवाद कम होता है। अनुज्ञेय शैली में स्वतंत्रता अधिक होती है, जबकि उपेक्षात्मक शैली में माता–पिता की सहभागिता न्यूनतम होती है।

3. अध्ययन के उद्देश्य–

1. छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।
2. विभिन्न पालन–पोषण शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. पालन–पोषण शैली एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्य संबंध ज्ञात करना।
4. छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं पर अभिभावकीय व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन करना।

4. परिकल्पनाएँ–

1. अधिकारपूर्ण पालन–पोषण शैली वाले छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाएँ उच्च होंगी।
2. अधिनायकवादी एवं उपेक्षात्मक शैली वाले छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाएँ निम्न होंगी।
3. पालन–पोषण शैली एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्य महत्वपूर्ण संबंध होगा।

5. अनुसंधान विधि–

5.1 अनुसंधान विधि– वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

5.2 नमूना– 300 माध्यमिक विद्यालय छात्रों का चयन किया गया।

तालिका 1: पालन–पोषण शैली के आधार पर छात्रों का वर्गीकरण

पालन–पोषण शैली	छात्र संख्या	प्रतिशत
अधिकारपूर्ण	110	36-67%
अधिनायकवादी	80	26-67%
अनुज्ञेय	65	21-67%
उपेक्षात्मक	45	15%
कुल	300	100%

5. प्रयुक्त उपकरण–

1. **पालन–पोषण शैली मापनी**
2. **व्यावसायिक आकांक्षा सूची**

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

7. आंकड़ों का विश्लेषण–

तालिका 2: विभिन्न पालन–पोषण शैलियों के अनुसार व्यावसायिक आकांक्षाओं का माध्य

पालन–पोषण शैली	छात्र संख्या	प्रतिशत
अधिकारपूर्ण	110	36.67%
अधिनायकवादी	80	26.67%
अनुज्ञेय	65	21.67%
उपेक्षात्मक	45	15%
कुल	300	100%

तालिका से स्पष्ट है कि अधिकारपूर्ण पालन–पोषण शैली वाले छात्रों का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर सर्वाधिक है।

तालिका 3: परीक्षण द्वारा तुलना

पालन–पोषण शैली	छात्र संख्या	प्रतिशत
अधिकारपूर्ण	110	36.67%
अधिनायकवादी	80	26.67%
अनुज्ञेय	65	21.67%
उपेक्षात्मक	45	15%
कुल	300	100%

उपरोक्त परिणाम दर्शाते हैं कि विभिन्न पालन–पोषण शैलियों के बीच व्यावसायिक आकांक्षाओं में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

8. परिणाम एवं विवेचना– अध्ययन के परिणामों से निम्न तथ्य स्पष्ट हुए:

1. अधिकारपूर्ण पालन–पोषण शैली छात्रों में आत्म–विश्वास एवं उच्च आकांक्षाओं को विकसित करती है।
2. अधिनायकवादी शैली छात्रों में भय एवं निर्णयहीनता उत्पन्न कर सकती है।
3. उपेक्षात्मक पालन–पोषण शैली छात्रों के व्यक्तित्व विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
4. अनुज्ञेय शैली छात्रों को स्वतंत्रता तो देती है, परंतु अनुशासन की कमी के कारण लक्ष्य स्पष्टता कम हो सकती है।
5. सकारात्मक पारिवारिक वातावरण छात्रों को उच्च करियर लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित करता है।

9. शैक्षिक निहितार्थ–

1. अभिभावकों को सकारात्मक पालन–पोषण शैली अपनाने हेतु प्रशिक्षित किया जाए।
2. विद्यालयों में अभिभावक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
3. छात्रों के लिए करियर परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
4. पारिवारिक सहयोग एवं भावनात्मक समर्थन को बढ़ावा दिया जाए।

10. निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पालन–पोषण शैली छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। अधिकारपूर्ण पालन–पोषण शैली छात्रों में आत्म–विश्वास, आत्म–निर्भरता तथा उच्च उपलब्धि प्रेरणा को विकसित करती है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी व्यावसायिक आकांक्षाएँ अधिक उच्च एवं यथार्थवादी बनती हैं। अतः माता–पिता को बच्चों के प्रति संतुलित, सहयोगात्मक एवं प्रोत्साहनपूर्ण व्यवहार अपनाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एडसुल, आर. के. एवं कांबले, वी. (2008). कॉलेज विद्यार्थियों में उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन लिंग, आर्थिक पृष्ठभूमि तथा जातिगत भिन्नताओं के संदर्भ में। जर्नल ऑफ द इंडियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, 34(2), पृष्ट संख्या 323–327.
2. अग्रवाल, वाई. पी. (2009). सांख्यिकीय विधियाँ, संकल्पनाएँ, अनुप्रयोग एवं गणना। नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड.
3. अकिन्सान्या, ओमोलाडे ओ., अजयी, कासिम ओ., सलोमी एवं मोडुपे ओ. (2014). ओगुन राज्य के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के गणित विषय में छात्रों की उपलब्धि पर अभिभावकों के व्यवसाय, योग्यता तथा शैक्षिक अभिप्रेरणा के सापेक्ष प्रभाव। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 5(22), पृष्ट संख्या 223–235.
4. अनिता, टी. ए. (2013). केरल के एर्नाकुलम जिले के उच्च विद्यालय विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन। आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस (IOSR&JHSS), 16(6), पृष्ट संख्या 43–46.

5. बानो, ए. (2002). सूचना प्रौद्योगिकी का अध्ययन आदतों एवं अवकाश समय की गतिविधियों पर प्रभावः वरिष्ठ माध्यमिक विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के संदर्भ में। (डॉक्टोरल शोधप्रबंध, शिक्षा विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, 2002)। प्राप्त स्रोतः http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/52793
6. बार्डिक, ए. डी. एवं बर्न्स, के. बी. (2005). कक्षा सात से बारह तक के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाएँ। यूनिवर्सिटी ऑफ लेथब्रिज, मेडिसिन हैट, अल्बर्टा, कनाडा। प्राप्त स्रोतः https://www.uleth.ca
7. देवी, पी. (2014). 1012 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके मेटाकॉग्निशन, आत्मविश्वास एवं पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में अध्ययन। (डॉक्टोरल शोधप्रबंध), शिक्षा विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय। प्राप्त स्रोतः http://shodhganga.inflibnet.ac.in
8. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (1986). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986। नई दिल्ली, भारतः एमएचआरडी। प्राप्त स्रोतः http://www.ncert.nic.in/oth_anoun/npe86.pdf
9. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली, भारतः एमएचआरडी। प्राप्त स्रोतः https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
10. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (1966). शिक्षा आयोग प्रतिवेदन, 1964–66। नई दिल्ली, भारतः एमएचआरडी। प्राप्त स्रोतः http://dise-in/Downloads/KothariCommissionVol.1pp.1&287.pdf
11. होसेन, एस., परिवाश, एन., कियावाश, ए. जेड. एवं अफ्सोन, ए. जे. (2012). उत्कृष्ट फुटसल खिलाड़ियों में खेल कल्पना, आत्मविश्वास तथा बॉडी मास इंडेक्स का खेल सफलता से संबंध। एनल्स ऑफ बायोलॉजिकल रिसर्च, 3(11), पृष्ट संख्या 5293–5295।
12. जाफरी, एस. (2012). वरिष्ठ माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य, अध्ययन आदतों एवं आत्मविश्वास का प्रभाव। (डॉक्टोरल शोधप्रबंध), शिक्षा संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय। प्राप्त स्रोतः http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/13522
13. न्यायमूर्ति वर्मा आयोग। (2012). भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित शिक्षक शिक्षा पर उच्चस्तरीय आयोग की रिपोर्ट। एमएचआरडी, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग। प्राप्त स्रोतः https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/documentreports/JVC:20Vol:201.pdf
14. कौर, टी. एवं मंजू, एम. (2007). किशोर बालिकाओं में उपलब्धि अभिप्रेरणा, आत्मविश्वास एवं आत्मदृढ़ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन, 38(2), पृष्ट संख्या 166–169।
15. कोठारी, सी. आर. (2010). अनुसंधान पद्धति (द्वितीय संस्करण)। 55–68। नई दिल्लीः न्यू एज इंटरनेशनल।
16. कौल, एल. (2010). शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति (चतुर्थ संस्करण)। (पृष्ट संख्या 76–91, पृष्ट संख्या 305–392)। नोएडाः विकास पब्लिकेशन।
17. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद। (2009). शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखाः पेशेवर एवं मानवीय शिक्षक तैयार करने की दिशा में। नई दिल्ली, भारतः एनसीटीई। प्राप्त स्रोतः https://ncte.gov.in/Website/PDF/NCFTE_2009.pdf
18. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद। (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005। नई दिल्ली, भारतः एनसीईआरटी। प्राप्त स्रोतः http://www.ncert.nic.in/rightside/links/pdf/framework/english/nf2005.pdf
19. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद। (2006). स्थिति पत्रः विज्ञान शिक्षण पर राष्ट्रीय फोकस समूह। नई दिल्ली, भारतः एनसीईआरटी। प्राप्त स्रोतः http://www.ncert.nic.in/new_ncert/ncert/rightside/links/pdf/focus_group/science.pdf
20. नीलिमा, एम. (2011). महाविद्यालय विद्यार्थियों की आत्मविश्वास एवं मानसिक स्वास्थ्य का भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संदर्भ में अध्ययन। (डॉक्टोरल शोधप्रबंध), आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय। प्राप्त स्रोतः http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/124040

*****